पद १५१

(राग: पिलु - ताल: त्रिताल) करुणाकर कृष्ण मुरारे। कमलावर धांउनि येई रे।।ध्रु.।। राधाप्रिय

नंदकंदा। गोवर्धनधारी मुकुंदा। निरुपाधि नित्यानंदा।

वृन्दावनवासी गोविंदा।।१।। गोपाळा वाहन सुपर्णा। वृजदारामानसहरणा। यद्नायक दीनोद्धरणा। कमलाक्षा

मेघवर्णा ।।२।। मुरलीधर कैटभारी । कंसांतक लीलाधारी । पांडवसखा दीनसहकारी। भयकृद्भयनाशन हरी।।३।। योगीजनमानसहंसा। जगतारक जगन्निवासा। अविनाशा आदि पुरुषा । रक्षक दीन माणिक दासा ।।४।।